वर्ष 40 ▪ अंक 12
फरवरी ▪ 2023 ▪ मूल्य ₹ 60

वर्तमान साहित्य

साहित्य, कला और सोच की पत्रिका

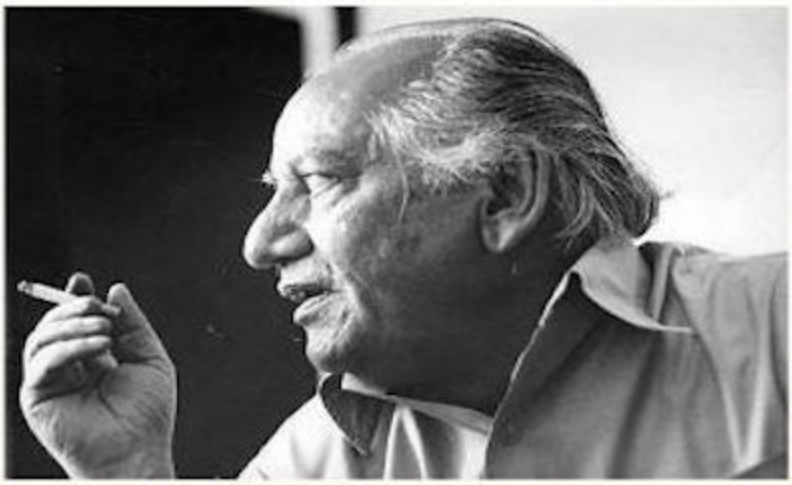

फैज अहमद फैज़

(13 फरवरी 1911 -- 20 नवंबर 1984)

हम परवरिशे-लौहो-क़लम करते रहेंगे
जो दिल पे गुज़रती है रक़म करते रहेंगे।
असबाबे-ग़मे-इश्क बहम करते रहेंगे
वीरानी-ए-दौराँ पे करम करते रहेंगे।
हाँ, तल्ख़ी-ए-अय्याम अभी और बढ़ेगी
हाँ, अह्ले-सितम मश्क़े-सितम करते रहेंगे।
मंज़ूर यह तल्ख़ी, ये सितम हमको गवारा,
दम है तो मदावा-ए-अलम करते रहेंगे।
मयख़ानः सलामत है तो हम सुर्ख़ी-ए-मय से
तजईने-दरो-बामे-हरम करते रहेंगे।
बाक़ी है लहू दिल में तो हर अश्क से पैदा
रंगे-लबो रुख़सारे-सनम करते रहेंगे।
इक तर्ज़े-तग़ाफ़ुल है सो वो उनको मुबारक
इक अर्ज़े-तमन्ना है सो हम करते रहेंगे।

- फैज़ अहमद फैज़ (दस्त-ए-सबा से)

वर्तमान साहित्य

आगामी अंक मार्च - अप्रैल 2023

समकालीन महिला लेखन विशेषांक

अतिथि सम्पादक : **ममता कालिया**

संपादक : **संजय श्रीवास्तव**

संस्मरण : उषा प्रियंवदा

लेख : मृदुला गर्ग, अनामिका, रोहिणी अग्रवाल, गरिमा श्रीवास्तव, प्रीति चौधरी, शंपा शाह, सीमा आज़ाद, मीना झा, आकांक्षा यादव एवं अलका प्रकाश आदि।

समीक्षाएँ : मधु बी.जोशी, विजया सती आदि।

कहानियाँ : उषाकिरण खान, मधु कांकरिया, सारा राय, गीताश्री, उर्मिला शिरीष, कुसुम भट्ट, रजनी गुप्त, वंदना राग, मनीषा कुलश्रेष्ठ, नीलाक्षी सिंह, प्रज्ञा रोहिणी, अनीता गोपेश, आकांक्षा पारे काशिव, जयश्री रॉय, रूपा सिंह, सपना सिंह, अणुशक्ति सिंह, नीतू मुकुल एवं अन्य कथाकार।

कविताएँ : जेसिंता केरिकेट्टा, नीलेश रघुवंशी, अनुराधा सिंह, वाजदा खान, रूपम मिश्र, जोशना बनर्जी अडवानी, संध्या नवोदिता, वंदना चौबे, पंखुरी सिन्हा, शैलजा पाठक, विशाखा मुलमुले, रश्मि भारद्वाज, बीनू कबीर, अर्चना लार्क, प्रिया वर्मा आदि की कविताएँ।

अपनी प्रति सुरक्षित कराने के लिए

हमारे संपादकीय कार्यालय के मोबाइल नं/व्हाट्सएप पर सम्पर्क करें :

9005484595, 9531834834, 9565059141

व्हाट्सएप : 941589348

संस्थापक सम्पादक : विभूति नारायण राय
सलाहकार सम्पादक : भारत भारद्वाज

☐ वर्ष 39-40 ☐अंक 12 ☐ फरवरी 2023
RNI पंजीकरण संख्या 40342/ 83 UPHIN12563

सम्पादकीय कार्यालय
राजीव निकेतन 16/57 डी-10, कादीपुर, शिवपुर, वाराणसी (उ.प्र.)
पिन-221003
मो. 9005484595, 9531834834
9415893480

ई-मेल : vartmansahitya2021@gmail.com
वेबसाइट : vartmansahitya.org

डिजिटल प्रभार : सत्या एस. दुबे

प्रसार व्यवस्थापक : अभिषेक ओझा

रेखांकन : संदीप राशिनकर
आवरण : अंतरिक्ष

सहयोग राशि : 60 रुपये
☐ पंजीकृत डाक से एक अंक 80 रुपये
☐ पंजीकृत डाक से वार्षिक सदस्यता (12अंक) 940 रुपये
☐ संस्थाओं व लाइब्रेरियों के लिए वार्षिक : 1200/-
☐ विदेशों में वार्षिक : 100 डॉलर।

बैंक के माध्यम से सदस्यता शुल्क भेजने के लिए
संजय कुमार श्रीवास्तव
खाता सं. : 28660100008342
IFSC : BARB0SHIVBS
बैंक ऑफ बड़ौदा, शाखा-शिवपुर, जिला-वाराणसी (उ. प्र.), 221003
Google Pay **9005484595**
कृपया राशि भेजने की सूचना तत्काल ईमेल, व्हाट्सएप अथवा पत्र द्वारा अपने पते सहित भेजें।

वितरक : रुद्रादित्य प्रकाशन समूह
इलाहाबाद-211015
फोन नं. 0532-2972226, 8175030339

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की रीति-नीति या विचारों से **वर्तमान साहित्य,** संपादक मंडल या संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। संपादन एवं संचालन पूर्णतया अवैतनिक और अव्यावसायिक है। सभी विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में होगा।

वर्तमान साहित्य

साहित्य, कला और सोच की पत्रिका

सम्पादक
संजय श्रीवास्तव

उप सम्पादक
शशि कुमार सिंह

सह सम्पादक
सुजीत कुमार सिंह
अलका प्रकाश

सम्पादन सहयोग
नरेश कुमार

अनुक्रम

सम्पादकीय

खण्डहर में घुग्घू और चमगादड़ 3
संजय श्रीवास्तव

सम्मति 4

लेख

हिन्दी गद्य की जातीय परम्परा : 5
भोपाल घराने का गद्य बरक्स अशोक वाजपेयी का गद्य
कुमार पंकज

लेख

सर्जनात्मक ठंडेपन के भीतर अनुस्यूत लेखक 20
की गहरी प्रतिबद्धता
(सन्दर्भ : पंकज मित्र वाया 'बैल का स्वप्न')
शंभु गुप्त

स्तम्भ : कविता से लौटते हुए 30
ज्ञानेंद्रपति का रचना-संसार : काव्य-रूप
और अंतर्वस्तु की द्वंद्वात्मक चेतना का विस्तार
दिनेश प्रताप सिंह

लेख

जवाहरलाल नेहरू और बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी 38
शुभनीत कौशिक

रिपोर्ताज़

दिल्ली से बाहर भी रंगमंच होता है 42
ममता धवन

व्यंग्यः शृंखला-एक

गो-भक्ति देशभक्ति 47
अवधेश प्रधान

कहानी

औकात : *राज बोहरे* 49
दुख का उत्सव : *दाशरथि भूयाँ* 57
अनुवाद : भगवान त्रिपाठी
पटाक्षेप : *प्रगति गुप्ता* 60
जुल्मतों के दौर में : *शेखर मल्लिक* 64
फ़लसफ़ा : *सुनीता आदित्य* 71
जो मरने के लिए ज़िंदा थे : *मनोरंजन ब्यापारी* 80
अनुवाद – नीलम शर्मा 'अंशु'

कविताएँ

प्रमोद बेड़िया 84
कैलाश मनहर 86
केवल गोस्वामी 88
सुधांशु कुमार मालवीय 89
शैलेन्द्र चौहान 92
कौशल किशोर 94
अनुपमा तिवाड़ी 96

स्तम्भ

किताबों की दुनिया : *शशि कुमार सिंह* 98

पुस्तक समीक्षा

प्रतिरोध की नयी काव्य-भाषा : *कमलेश वर्मा* 101
जीवन-अँजोर के रचनाकार से
आत्मीय संवाद : 'समय का अनजान पथिक' 103
: *रेनू त्रिपाठी*
विपश्यना : स्त्री संघर्ष, सशक्तीकरण 107
और त्रासदी की कथा... :
प्रभाकर सिंह
'कर्बला दर कर्बला' के संदर्भ में सांप्रदायिकता : 110
नारायण सिंह
प्रतिरोध का प्रखर स्वर 'बाकी बचे कुछ लोग' : 113
शालिनी माथुर
मारीच पथ : यथार्थ की ज़मीन पर उगी कहानियाँ : 116
हरिशंकर राढ़ी

गतिविधियाँ 119

सम्पादकीय

हम देखेंगे....

खण्डहर में घुग्घू और चमगादड़

साधो,

कहते हैं कि साँप दूसरे जन्तुओं के बिल में रहते हैं। बिल बनाने में श्रम लगता है और साँप के बस का तो ये है ही नहीं। लिहाजा वह दूसरों के बिल में ही घुसता है। ऐसे ही हिन्दी जगत में इधर श्रम और विचार से हीन लोगों ने पुरानी और ऐतिहासिक संस्थाओं को बसेरा बनाना शुरू किया है। संस्कृति और समाज के लिए यह बहुत ही खतरनाक संकेत है।

याद कीजिए बहुत पहले नागरी प्रचारिणी सभा, काशी और प्रयाग का साहित्य सम्मेलन नवजागरणकाल में खड़ी बोली हिन्दी के उन्नयन एवं विकास के लिए सामाजिक सहयोग से स्थापित हुई थीं। आरंभ से ही इन संस्थाओं में उच्च कोटि के विद्वान यथा बाबू श्यामसुंदर दास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पं. चंद्रधर शर्मा गुलेरी, रामचंद्र वर्म्मा, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ.राजबली पाण्डेय आदि नागरी प्रचारिणी सभा से जुड़े थे तो राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन द्वारा साहित्य सम्मेलन, प्रयाग संस्थापित हुआ। वहीं महात्मा गांधी ने हिन्दी-उर्दू-हिंदुस्तानी के राष्ट्रीय प्रसार में योग देते हुए हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद की स्थापना की। इन संस्थाओं ने हिन्दी, उर्दू एवं अन्य भारतीय भाषाओं के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। पुस्तकों के प्रभूत संग्रह के साथ ही शब्दकोश, वृहत साहित्य कोश एवं विश्वकोश तैयार करने का दायित्व इन संस्थाओं ने निभाया। इन संस्थाओं का अपना गौरवशाली इतिहास है। लेकिन बीते पचास साल से इन संस्थाओं में अब जहरीले साँप कुण्डली मार कर बैठे हुए हैं। इनसे मुक्ति की गुहार अर्से से देश भर के साहित्यकार लगा रहे हैं। मगर सरकारों ने इनके उद्धार में कभी कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई। हिन्दी भाषा और साहित्य के ये ऐतिहासिक धरोहर जो समृद्ध पुस्तकालय और प्रकाशन केंद्र के रूप में ख्यात थे, आज उन पर दो परिवारों का वंशानुगत कब्जा है और इन्हें बेचने-खाने का कारोबार चल रहा है। इन्हें मुक्त कराने के अनेकानेक जनप्रयास लगातार विफल होते रहे हैं। शासन-प्रशासन का दल-बल भी उनके साथ है। निराला याद आते हैं 'अन्याय जिधर, हैं उधर शक्ति।'

यही हाल इधर करीब दो-एक दशक से संस्कृति-च्युत, विचारहीन विपन्नमति ऐसे ही लोगों ने प्रख्यात भाषाविद डॉ.धीरेंद्र वर्मा द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर स्थापित 'भारतीय हिन्दी परिषद, प्रयाग' पर आधिपत्य जमा रखा है। इधर इसके चुनाव की तैयारी जोर-शोर पर है। इस संस्था में सदस्यता जिन्हें मिली हुई है उनमें प्रायः हिन्दी के शिक्षक ही हैं और खुद को हिन्दी-भाषा का सेवक, आलोचक, लेखक, कवि आदि मानते हैं। वैसे ये बीमारी हिन्दी और उर्दू में पहले से ही है। ये बात आप संस्कृत, अंग्रेज़ी या अन्य भाषाओं में नहीं पाएँगे।

हिन्दी के इन शिक्षकों का एक और कारनामा सामने आया है जिसे सुन कर हैरानी होती है। इन्होंने 'परिमल' जैसी ऐतिहासिक संस्था, जिसका स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में विचारधारा और लेखन के स्तर पर गहरा प्रभाव रहा है, उसे 'नया परिमल' नाम देते हुए दक्षिणपंथी अध्यापकों ने अपने कब्जे में ले लिया है। ज़रा सोचिए कहाँ 'परिमल' जिसकी चर्चा के बिना हम आधुनिक साहित्य की कल्पना नहीं कर सकते, जिसकी गोष्ठियों का अपना इतिहास है और जिसकी शुरुआत इंदर नारायण टंडन, विशन नारायण टंडन, गिरिधर गोपाल, महेश चतुर्वेदी वकील और केशव चंद्र वर्मा आदि ने विद्यार्थी जीवन में की थी। काफी समय बाद इन्हीं विद्यार्थी कवियों की एक गोष्ठी बनी जिसका नाम 'परिमल' हुआ। बाद में इसकी गोष्ठियों में हरिवंशराय 'बच्चन', फिराक गोरखपुरी, डा.रमाशंकर शुक्ल 'रसाल' और प्रो.अमरनाथ झा भी शामिल हुए। आगे तो इसे सक्रिय बनाने में इलाचंद्र जोशी, धर्मवीर भारती, विजयदेव नारायण साही, लक्ष्मीकांत वर्मा, ब्रजेश्वर वर्मा, डॉ.रघुवंश, डॉ.जगदीश गुप्त, डा.रामस्वरूप चतुर्वेदी आदि की भूमिका प्रमुख रही। इसका विस्तृत विवरण केशव चंद्र वर्मा की पुस्तक 'परिमल : स्मृति और दस्तावेज' में देखा जा सकता है। उसी 'परिमल' को अब 'नया परिमल' नाम दे कर दक्षिणपंथी बुद्धिजीवियों ने अपनी संस्था घोषित कर दी है। इन दिनों विश्वविद्यालय और महाविद्यालय के हिन्दी विभागों में इसकी सदस्यता का अभियान चल रहा है। इसके पीछे शायद यह बड़ा महत्वपूर्ण कारण हो सकता है कि इन दक्षिणपंथी बुद्धिजीवियों के पास प्रगतिशील लेखक संघ, इप्टा, जनवादी लेखक संघ या जन संस्कृति मंच जैसा सांस्कृतिक संगठन नहीं है और न ही इनका कोई जनपक्षधर साहित्यकार जिसे लेकर इन्हें गर्व और गौरव की अनुभूति हो। ऐसे साहित्यकार की भ्रामक खोज इन्होंने हिन्दी के अध्यापकों में कर ली है और उनके लिए साहित्य की नामी-गिरामी संस्थाएँ जो अतीत की धरोहर हैं, उन पर इनका आधिपत्य दिखा रहे हैं। इसे देख कर मुक्तिबोध की कविता 'अँधेरे में' पढ़ते हुए खण्डहर में तब्दील भुतही हवेली के घुग्घू और चमगादड़ याद आ रहे हैं।

साधो, इसी अधम-पतित क्षण में तड़ित झटित द्युति ने हम सबको विमोहित कर लिया जब प्रख्यात कवि-कथाकार विनोद कुमार शुक्ल को अंतरराष्ट्रीय पेन सम्मान दिए जाने की घोषणा हुई। एक साल के अंदर यह अभिभूत करने वाला दूसरा अवसर है जब हिन्दी भाषी समाज को वैश्विक प्रतिष्ठा मिली है। पहले गीतांजलि श्री और अब विनोद कुमार शुक्ल को मिले इस सम्मान के अनेक सकारात्मक संकेत भी हैं जिस पर हम बाद में चर्चा करेंगे। अभी तो विनोदजी को 'वर्तमान साहित्य' की तरफ से अशेष बधाई !

प्रिय पाठको, 'वर्तमान साहित्य' नयी आवृत्ति में इसी अंक के साथ एक साल पूरा कर रहा है। इस दौरान आपके असीम स्नेह ने इसे अपार ऊर्जा दी है। इस एक साल में गीतांजलि श्री और नवजागरणकालीन स्त्री कविता विशेषांक हमने प्रकाशित किये और अब वरिष्ठ कथाकार ममता कालियाजी के अतिथि सम्पादन में समकालीन महिला लेखन विशेषांक की आगामी अंक के रूप में तैयारी है। इसी के साथ सामान्य अंकों में विभिन्न मुद्दों के बीच सार्थक हस्तक्षेप करते हुए हम लगातार लेखकों का पक्ष भी प्रकाशित कर रहे हैं। जाहिर है इस सब की सहज स्वीकार्यता ने अनेक कठिनाइयों के बावजूद हमारे काम को आसान ही किया है।

अंत में हम सबके अजीज़ और साहित्य में अपनी ख़ास उपस्थिति रखने वाले साहित्यकार साथी सुरेश सलिल का हमसे बिछड़ना बेहद तकलीफदेह है। इसी अवधि में साहित्य-संस्कृति की दुनिया में और मित्रों का बिछोह हमें सहना पड़ा है। अतः पत्रिका परिवार की तरफ से इन सभी दिवंगत साथियों को विनम्र श्रद्धांजलि !!